

## बसवकल्याण में 'अनुभव मंडप': कर्नाटक

### चर्चा में क्यों?

कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने बसवकल्याण में 'न्यू अनुभव मंडप' की आधारशिला रखी है, ज्ञात हो कियह वह स्थान है जहाँ 12वीं शताब्दी के कवि-दार्शनिक बसवेश्वर ने अपने जीवन का अधिकांश समय बतियाया था।

### प्रमुख बदि

#### न्यू अनुभव मंडप

- यह 7.5 एकड़ भूखंड में बनी छह मंजलि की संरचना होगी, जो कबिसवेश्वर के दर्शन के वभिन्न सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करेगी।
- यह 12वीं शताब्दी में बसवेश्वर द्वारा बसवकल्याण में स्थापित 'अनुभव मंडप' (जसि प्रायः वशिव की पहली संसद के रूप में संदर्भित किया जाता है) को प्रदर्शित करेगी। वदिति हो कबिसवेश्वर द्वारा स्थापित 'अनुभव मंडप' में वभिन्न दार्शनिकों और समाज सुधारकों द्वारा वाद-ववाद किया जाता था।
- इसका निर्माण वास्तुकला की कल्याण चालुक्य शैली में किया जाएगा।
  - कल्याण चालुक्य, मध्ययुगीन काल के प्राचीन कर्नाटक इतिहास का एक अभिन्न अंग है। कल्याण चालुक्य शासकों ने अपने पूर्ववर्ती शासकों की तरह ही मंदिरों का निर्माण करवाया और नृत्य तथा संगीत कलाओं का संरक्षण किया।
- 770 स्तंभों द्वारा समर्थित इस भव्य संरचना में 770 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभागार भी बनाया जाएगा।
- ऐसा माना जाता है कि 770 शरणों (बसवेश्वर के अनुयायी) ने 12वीं शताब्दी में 'वचन' सुधारवादी आंदोलन का नेतृत्व किया था।
- इसके शीर्ष पर एक विशाल शविलिगि स्थापित किया जाएगा।
- इस परियोजना में अत्याधुनिक रोबोट प्रणाली, ओपन-एयर थिएटर, आधुनिक जल संरक्षण प्रणाली, पुस्तकालय, अनुसंधान केंद्र, प्रार्थना हॉल और योग केंद्र आदिकी भी परिकल्पना की गई है।

### बसवेश्वर



#### संक्षिप्त परिचय

- गुरु बसवेश्वर (1134-1168) एक भारतीय दार्शनिक, समाज सुधारक व नेतृत्वकर्त्ता थे, जिन्होंने जातिविहीन समाज बनाने का प्रयास किया और जाति तथा धार्मिक भेदभाव के वरिद्ध संघर्ष किया।
  - बासवन्ना जयंती, एक वार्षिक कार्यक्रम है, जसि संत बासवन्ना (भगवान बसवेश्वर) के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
  - गुरु बसवेश्वर का जन्म 1131 ईसवी में बागेवाड़ी (कर्नाटक के अवभिजित बीजापुर ज़िले में) नामक स्थान पर हुआ था।
- गुरु बसवेश्वर को लगायत संप्रदाय का संस्थापक भी माना जाता है।

## दर्शन

- गुरु बसवेश्वरा द्वारा प्रतपिदति दर्शन अरवि (सत्य ज्ञान), आचार (सही आचरण), और अनुभव (द्विय अनुभव) के सिद्धांतों पर आधारित था, जसिने 12वीं शताब्दी में सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्रांति ला दी थी।
- वे संभवतः वर्ष 1154 में 'कल्याण' (वर्तमान में 'बसवकल्याण') चले गए और वहाँ 12-13 वर्ष के लंबी अवधिक नविस के दौरान उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये।
  - उन्हीं के प्रयासों के कारण धर्म के दरवाजे जाति, पंथ या लिंग के आधार पर भेदभाव किये बिना सभी के लिये खोल दिये गए।
  - उन्होंने 'अनुभव मंडप' की स्थापना की, जो कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा के लिये सामान्य मंच था।
    - इस प्रकार इसे भारत की पहली संसद माना जाता है, जहाँ 'शरणों' ने एक साथ बैठकर एक लोकतांत्रिक ढाँचे में समाजवादी सिद्धांतों पर चर्चा की।
  - उन्होंने दो अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत दिये-
    - **कायका (ईश्वरीय कार्य):** इस सिद्धांत के अनुसार, समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद का कार्य पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिये।
    - **दसोहा (समान वितरण)**
      - समान कार्य के लिये समान आय होनी चाहिये।
      - कामगार (कायकाजीवी) अपनी मेहनत की कमाई से आसानी से जीवनयापन कर सकते हैं। उन्हें भविष्य के लिये धन या संपत्ति को संरक्षित नहीं करना चाहिये, बल्कि अधिशेष धन का उपयोग समाज तथा गरीबों के कल्याण के लिये करना चाहिये।

## 'वचन' सुधार आंदोलन

- 12वीं शताब्दी में बसवेश्वरा के नेतृत्व में हुए 'वचन' (कविता) आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सभी का कल्याण करना था।
- इस आंदोलन ने तत्कालीन समय के मौजूदा सामाजिक परविश में वर्ग, जाति और कुछ हद तक लैंगिक मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास किया।

## स्रोत: द हट्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/anubhava-mantapa-in-basavakalyan-karnataka>

